



वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी लोक साहित्य की भूमिका

डॉ. शैलेन्द्र पाल सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

नेहरू मेमोरियल शिव नारायण दास कॉलेज, बदायूं (उ.प्र.)

सारांश

हिन्दी लोक साहित्य भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपराओं के माध्यम से संप्रेषित सामूहिक स्मृति, सामाजिक मूल्यों तथा जीवनानुभवों को अभिव्यक्त करता है। समकालीन युग में वैश्वीकरण ने इन पारंपरिक रूपों की संरचना, संप्रेषण तथा सांस्कृतिक प्रासंगिकता को गहन रूप से प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी लोक साहित्य की भूमिका का परीक्षण उसके रूपांतरण, संरक्षण तथा अंतरराष्ट्रीय प्रसार के आधार पर करता है। इस शोध में गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति का अवलंबन किया गया है। साथ ही नव चयनित लोक साहित्यिक इकाइयों—लोकगीत, लोककथाएं, वीरगाथाएं, लोकोक्तियां तथा लोकनाट्य प्रस्तुतियों—का सांख्यिकीय सामग्री-विश्लेषण भी किया गया है। निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि लोकगीत सर्वाधिक प्रभावी तथा अनुकूलनशील विधा के रूप में विद्यमान हैं, जबकि आधुनिक प्रौद्योगिकी आधारित संचार माध्यम संप्रेषण के प्रमुख साधन के रूप में उभरकर पारंपरिक मौखिक पद्धतियों का स्थान ग्रहण कर रहे हैं। विषय वस्तु-विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि पारंपरिक ग्रामीण एवं अनुष्ठानिक विषयों के साथ-साथ स्त्री-अनुभव, प्रवास तथा सामाजिक परिवर्तन की अभिव्यक्ति में निरंतर वृद्धि हुई है। भाषिक संरचना में क्षेत्रीय बोलियों की निरंतर उपस्थिति के साथ मानक एवं मिश्रित भाषा-रूपों का विस्तार भी दृष्टिगोचर होता है।

अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि वैश्वीकरण के कारण प्रवासी समुदायों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों, विश्वविद्यालयों तथा आधुनिक संचार मंचों के माध्यम से हिन्दी लोक साहित्य का वैश्विक स्तर पर प्रसार सुलभ हुआ है।



मुख्य शब्द: हिन्दी लोक साहित्य, वैश्वीकरण, सांस्कृतिक अस्मिता, मौखिक परंपरा, सांस्कृतिक रूपांतरण, सांस्कृतिक संरक्षण

1- प्रस्तावना

लोक साहित्य ऐतिहासिक रूप से सामूहिक सांस्कृतिक चेतना की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियों में से एक रहा है। भारत में हिन्दी लोक साहित्य का विशेष स्थान है, क्योंकि यह ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी समुदायों की परंपराओं, भावनाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करता है। व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित लिखित साहित्य से भिन्न, लोक साहित्य सामूहिक सृजनशीलता तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से विकसित होता है।

वैश्वीकरण, जो प्रौद्योगिकी उन्नति, वैश्विक संचार तंत्र, प्रवासन तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान से चिह्नित है, ने पारंपरिक समाजों को व्यापक रूप से रूपांतरित किया है। जो सांस्कृतिक प्रथाएं पूर्व में स्थानीय समुदायों तक सीमित थीं, वे अब वैश्विक दर्शकों के समक्ष उपस्थित हो रही हैं। यद्यपि यह प्रक्रिया सांस्कृतिक अंतःक्रिया को सुलभ बनाती है, तथापि इससे सांस्कृतिक एकरूपता तथा स्वदेशी परंपराओं के क्षरण की आशंकाएं भी उत्पन्न होती हैं।

इस परिवर्तित परिप्रेक्ष्य में हिन्दी लोक साहित्य संक्रमण के एक महत्वपूर्ण चरण पर स्थित है। एक ओर यह मौखिक परंपराओं के हास तथा वाणिज्यीकरण से संबंधित चुनौतियों का सामना कर रहा है, तो दूसरी ओर वैश्वीकरण इसके संरक्षण एवं पुनर्जीवन के लिए नए अवसर भी प्रदान करता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि हिन्दी लोक साहित्य वैश्विक प्रभावों के अनुरूप किस प्रकार स्वयं को रूपांतरित करते हुए अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को निरंतर बनाए रखता है।

2- साहित्य समीक्षा

अहमद (2024) ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के लोक साहित्य का व्यापक अवलोकन प्रस्तुत करते हुए उसके सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया कि लोक साहित्य सामूहिक स्मृति, सामाजिक परंपराओं तथा स्वदेशी ज्ञान के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है, जो मौखिक परंपरा के



द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होता रहा। अहमद ने इस तथ्य पर बल दिया कि लोक आख्यान, लोकगीत तथा प्रदर्शन-परंपराएं क्षेत्रीय पहचान और सामुदायिक मूल्यों का द्योतन करती हैं। अध्ययन में यह भी प्रतिपादित हुआ कि आधुनिकीकरण तथा परिवर्तित संचार प्रणालियों ने पारंपरिक रूपों को प्रभावित किया है; तथापि लोक धरोहर के संरक्षण हेतु सुनियोजित प्रलेखन तथा शैक्षणिक संलग्नता को अत्यावश्यक उपाय माना गया।

काजी (2022) ने उत्तर-पूर्व भारत की लोक संस्कृति पर वैश्वीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए वैश्विक सांस्कृतिक शक्तियों और स्वदेशी परंपराओं के परस्पर संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि वैश्वीकरण ने द्विविध प्रभाव उत्पन्न किया—एक ओर सांस्कृतिक दृश्यता में वृद्धि हुई, तो दूसरी ओर सांस्कृतिक एकरूपता तथा मौलिकता के हास की आशंकाएं भी उभरीं। काजी ने प्रतिपादित किया कि संचार माध्यमों के विस्तार और प्रौद्योगिकीय विकास ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूपों को रूपांतरित किया, जिससे लोक परंपराएं व्यापक जनसमूह तक पहुंचीं, किंतु साथ ही उनके पारंपरिक संदर्भ और अर्थों में भी परिवर्तन आया।

नाग (2021) ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण, संचार और सांस्कृतिक रूपांतरण के व्यापक संबंध का परीक्षण किया। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया कि संचार प्रौद्योगिकी की प्रगति तथा वैश्विक माध्यम-जाल ने सांस्कृतिक अंतःक्रिया की प्रकृति को परिवर्तित करते हुए स्थानीय परंपराओं के क्षेत्रीय सीमाओं से परे प्रसार को तीव्र किया। नाग का निष्कर्ष था कि वैश्वीकरण के कारण पारंपरिक सांस्कृतिक रूप लुप्त नहीं हुए, बल्कि आधुनिक संचार संरचनाओं के अंतर्गत उनका पुनर्व्याख्यान और अनुकूलन हुआ, जिससे विकसित होती सांस्कृतिक अस्मिताओं को नई दिशा प्राप्त हुई।

मुखर्जी (2023) ने आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के संदर्भ में लोक संस्कृति का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया, जिसमें समकालीन समाज में पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं की परिवर्तित स्थिति का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया कि आधुनिकीकरण ने सामुदायिक संरचनाओं में परिवर्तन लाकर मौखिक परंपराओं पर निर्भरता को कम किया, जबकि वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक पुनर्जीवन और पुनर्व्याख्या के लिए नए मंच उपलब्ध कराए। मुखर्जी ने यह बलपूर्वक प्रतिपादित किया



कि लोक संस्कृति नवीन सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को रूपांतरित करते हुए आधुनिक तत्वों का समावेश करती है, तथापि अपनी पारंपरिक सार्थकता को पूर्णतः समाप्त नहीं होने देती।

3- हिन्दी लोक साहित्य तथा वैश्वीकरण की संकल्पनात्मक समझ

हिन्दी लोक साहित्य से आशय उन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों से है जो सामान्य जन द्वारा सृजित होकर मौखिक परंपरा के माध्यम से संप्रेषित होती हैं और जो जनजीवन की दैनिक अनुभूतियों में निहित रहती हैं। इसकी प्रमुख विशेषताओं में सामूहिक रचनात्मकता, भाषा की सरलता, क्षेत्रीय विविधता, प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति तथा अनुष्ठानों एवं सामाजिक प्रथाओं से निकट संबंध सम्मिलित हैं। इसके प्रमुख रूपों में लोकगीत, लोककथाएं, लोकगाथाएं, लोकोक्तियां, पहेलियां तथा नौटंकी और स्वांग जैसे लोकनाट्य रूप सम्मिलित हैं।

दूसरी ओर, वैश्वीकरण से आशय आर्थिक समेकन, माध्यमों के विस्तार तथा प्रौद्योगिकीय संचार के माध्यम से समाजों के मध्य बढ़ती परस्पर संबद्धता से है। सांस्कृतिक वैश्वीकरण विशेषतः कलात्मक परंपराओं को प्रभावित करता है, क्योंकि यह एक ओर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करता है, तो दूसरी ओर प्रमुख वैश्विक सांस्कृतिक रूपों के प्रसार को भी बढ़ावा देता है।

इन दोनों शक्तियों के परस्पर प्रभाव से सांस्कृतिक तनाव के साथ-साथ सृजनात्मक रूपांतरण की प्रक्रिया भी उत्पन्न होती है।

4- हिन्दी लोक साहित्य की ऐतिहासिक भूमिका

ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी लोक साहित्य एक अनौपचारिक शैक्षिक तथा संप्रेषणात्मक व्यवस्था के रूप में कार्य करता रहा है। व्यापक साक्षरता के अभाव के समय लोक आख्यानों के माध्यम से नैतिक मूल्यों, ऐतिहासिक स्मृतियों तथा सामाजिक मान्यताओं का संचार किया जाता था। लोकगीत कृषि-कार्य, जीवन-चक्र से संबंधित संस्कारों तथा ऋतु-उत्सवों के साथ जुड़े रहते थे, जिससे सामुदायिक एकता और पारस्परिक संबंध सुदृढ़ होते थे।



लोक परंपराएँ भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक समीक्षा के मंच के रूप में भी कार्य करती रही हैं। अनेक गीतों और आख्यानों में सामाजिक असमानता, प्रवासन, लैंगिक भूमिकाएँ तथा आर्थिक कठिनाइयों जैसे विषयों को अभिव्यक्त किया गया है। इस प्रकार लोक साहित्य केवल मनोरंजन का साधन न होकर सामूहिक सामाजिक चेतना का दर्पण रहा है।

5- अनुसंधान पद्धति

इस अध्याय में वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी लोक साहित्य की भूमिका का परीक्षण करने हेतु अपनाए गए पद्धतिगत ढाँचे का निरूपण किया गया है। चूँकि अध्ययन का केंद्र सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ, प्रतीकात्मक अर्थ तथा विकसित होती साहित्यिक परंपराएँ हैं, अतः समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में लोक प्रथाओं के रूपांतरण को समझने के लिए व्याख्यात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण को आवश्यक माना गया।

पद्धति का विन्यास इस प्रकार किया गया कि पारंपरिक तथा आधुनिक दोनों रूपों का क्रमबद्ध विश्लेषण गुणात्मक व्याख्या के साथ सहायक सांख्यिकीय सामग्री-विश्लेषण द्वारा किया जा सके। प्रतिनिधि लोक साहित्यिक इकाइयों के सावधानीपूर्वक चयन तथा बहुविध विश्लेषणात्मक तकनीकों के प्रयोग के माध्यम से संप्रेषण के प्रतिरूप, विषयगत विकास, भाषिक अनुकूलन तथा वैश्वीकरण से प्रभावित सांस्कृतिक महत्व का परीक्षण किया गया।

5-1 अनुसंधान रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक तथा व्याख्यात्मक अनुसंधान रूपरेखा को अपनाया गया, जिसे हिन्दी लोक साहित्य जैसे सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रतिमानों के अध्ययन हेतु सर्वाधिक उपयुक्त माना गया। लोक परंपराएँ सामाजिक प्रथाओं, प्रतीकात्मक अर्थों तथा सामूहिक अनुभवों में गहराई से निहित होती हैं, इसलिए अनुसंधान का केंद्र प्रायोगिक मापन के स्थान पर व्याख्यात्मक समझ पर रखा गया।

गुणात्मक दृष्टिकोण ने सांस्कृतिक आख्यानों, प्रदर्शन परंपराओं, भाषिक प्रतिरूपों तथा वैश्वीकरण से प्रभावित विषयगत रूपांतरणों का गहन अन्वेषण संभव बनाया। इस



रूपरेखा ने यह विश्लेषण करने में सहायता प्रदान की कि परिवर्तित सामाजिक-सांस्कृतिक तथा प्रौद्योगिकी परिवेश में पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियाँ किस प्रकार विकसित हो रही हैं।

5-2 विश्लेषण की विधि

संग्रहीत सामग्री का क्रमबद्ध अर्थान्वयन सुनिश्चित करने के लिए बहुविध गुणात्मक विश्लेषण तकनीकों का प्रयोग किया गया—

- **पाठ्य-विश्लेषण** - लोकगीतों और आख्यानों का परीक्षण कर उनमें निहित आवर्ती विषयों, प्रतीकों, रूपकों तथा सांस्कृतिक अर्थों की पहचान की गई।
- **तुलनात्मक विश्लेषण** - लोक साहित्य के पारंपरिक रूपों की तुलना समकालीन रूपांतरणों से की गई, जो प्रौद्योगिकी माध्यमों और व्यावसायिक मंचों पर उपलब्ध हैं, ताकि वैश्वीकरण के प्रभाव को समझा जा सके।
- **सांस्कृतिक व्याख्या** - अध्ययन में यह निरूपित किया गया कि परिवर्तित सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में लोक साहित्य सांस्कृतिक अस्मिता, लैंगिक भूमिकाओं, सामाजिक संबंधों तथा सामुदायिक मूल्यों को किस प्रकार प्रतिबिंबित करता है।
- **संदर्भात्मक विश्लेषण** - लोक साहित्यिक रूपों का परीक्षण प्रवासन, नगरीकरण, माध्यम-विस्तार तथा वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसी व्यापक प्रक्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में किया गया।

इसके अतिरिक्त, नब्बे चयनित लोक साहित्यिक इकाइयों का सांख्यिकीय सामग्री-विश्लेषण भी सम्मिलित किया गया, जिससे साहित्यिक रूपों, विषयों, संप्रेषण के साधनों तथा भाषा-प्रयोग से संबंधित आवृत्ति प्रतिरूपों की पहचान कर गुणात्मक व्याख्या को सुदृढ़ बनाया जा सके।

5-3 नमूना आकार

अध्ययन में विश्लेषणात्मक उद्देश्यों के लिए कुल नब्बे (90) लोक साहित्यिक इकाइयों का नमूना निर्धारित किया गया। प्रमुख रूपों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना-चयन पद्धति का उपयोग किया गया।



चयनित इकाइयों में प्रलेखित लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ तथा अभिलेखित लोकनाट्य प्रस्तुतियाँ सम्मिलित थीं, जिन्हें प्रकाशित साहित्यिक स्रोतों, सांस्कृतिक अभिलेखागारों तथा प्रौद्योगिकी माध्यमों से संकलित किया गया।

नमूना इस प्रकार विन्यस्त किया गया कि उसमें साहित्यिक विधा, विषय-वस्तु, भाषिक विविधता तथा संप्रेषण के साधनों के आधार पर विविधता परिलक्षित हो। कजरी, आल्हा, सोहर, चौती तथा अन्य क्षेत्रीय आख्यानात्मक रूपों जैसी प्रतिनिधि लोक परंपराओं को सम्मिलित कर पारंपरिक एवं समकालीन रूपांतरणों, जो वैश्वीकरण से प्रभावित हैं, को समग्र रूप से ग्रहण किया गया। प्रत्येक इकाई को एक स्वतंत्र सांस्कृतिक पाठ के रूप में ग्रहण कर गुणात्मक व्याख्या तथा सांख्यिकीय सामग्री-विश्लेषण के माध्यम से परीक्षण किया गया।

6- परिणाम एवं चर्चा

सारणी 1 में चयनित नब्बे साहित्यिक इकाइयों में सम्मिलित हिन्दी लोक साहित्य के विभिन्न रूपों का वितरण प्रस्तुत किया गया है। वर्गीकरण में लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकोक्तियाँ एवं पहेलियाँ तथा लोकनाट्य प्रस्तुतियाँ सम्मिलित हैं। प्रत्येक विधा के सापेक्ष प्रतिनिधित्व को स्पष्ट करने हेतु आवृत्ति तथा प्रतिशत मानों का उपयोग किया गया है।

सारणी 1: नमूने में लोक साहित्य के रूपों का वितरण

लोक साहित्य का रूप	आवृत्ति	प्रतिशत
लोकगीत	36	40.0
लोककथाएँ	21	23.3
लोकगाथाएँ	15	16.7
लोकोक्तियाँ एवं पहेलियाँ	10	11.1
लोकनाट्य प्रस्तुतियाँ	8	8.9



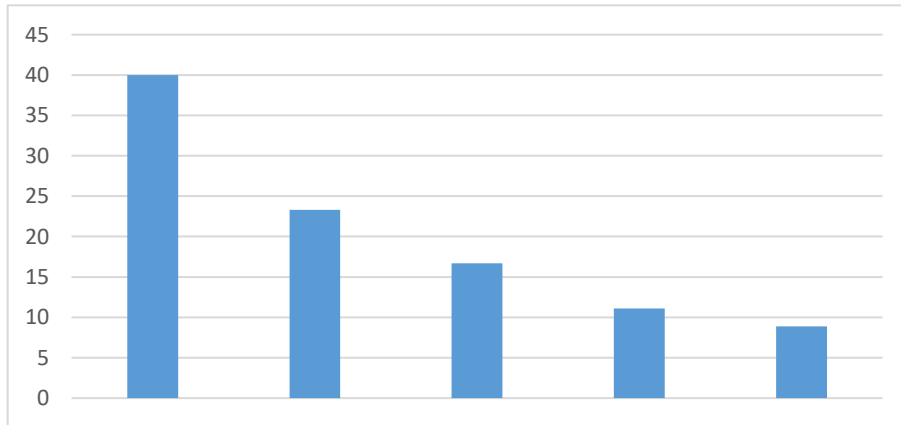
लोक साहित्य का रूप	आवृत्ति	प्रतिशत
कुल	90	100

सारणी से स्पष्ट होता है कि लोकगीत नमूने में सर्वाधिक अनुपात के साथ 36 इकाइयों (40 प्रतिशत) में विद्यमान हैं। यह हिन्दी लोक संस्कृति में संगीतात्मक परंपराओं की प्रमुखता तथा परिवर्तित सामाजिक एवं प्रौद्योगिकी संदर्भों के अनुरूप उनकी अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है।

लोककथाएँ 23.3 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर हैं, जो नैतिक तथा सांस्कृतिक आख्यानों के संप्रेषण में उनकी निरंतर महत्ता को प्रतिबिंबित करती हैं।

लोकगाथाएँ 16.7 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिससे वीरता एवं ऐतिहासिक स्मृतियों के संरक्षण में उनकी भूमिका स्पष्ट होती है।

लोकोक्तियाँ एवं पहेलियाँ (11.1 प्रतिशत) सामूहिक बुद्धि एवं लोकज्ञान के संवाहक के रूप में महत्वपूर्ण बनी हुई हैं, जबकि लोकनाट्य प्रस्तुतियाँ (8.9 प्रतिशत) सबसे कम प्रतिनिधित्व में दिखाई देती हैं। यह अभिलेखित एवं सरलता से प्रसारित होने योग्य रूपों की तुलना में प्रत्यक्ष प्रदर्शन-परंपराओं में क्रमिक हास का संकेत देती हैं।



चित्र 1: नमूने में लोक साहित्य के रूपों के वितरण का प्रतिशतात्मक चित्रात्मक निरूपण



चित्र 1 में लोक साहित्य के विभिन्न रूपों के प्रतिशत वितरण का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

यह दृश्य निरूपण अन्य विधाओं की तुलना में लोकगीतों की प्रमुखता को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है। लोकनाट्य के अपेक्षाकृत छोटे भाग से यह संकेत मिलता है कि वैश्वीकरण के युग में प्रदर्शन-आधारित परंपराएँ अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं, जबकि अभिलेखनीय एवं सरलता से प्रसारित होने योग्य रूपों को अधिक दृश्यता प्राप्त हो रही है।

सारणी 2 में हिन्दी लोक साहित्य के संप्रेषण तथा संरक्षण के विभिन्न माध्यमों को प्रदर्शित किया गया है। इनमें मौखिक सामुदायिक प्रस्तुतियाँ, अनुष्ठानिक अथवा पारिवारिक परंपराएँ, मुद्रित साहित्यिक स्रोत तथा प्रौद्योगिकी माध्यम सम्मिलित हैं। यह सारणी सांस्कृतिक संप्रेषण की पद्धतियों में आए रूपांतरण को प्रतिबिंबित करती है।

सारणी 2: अवलोकित संप्रेषण के माध्यम

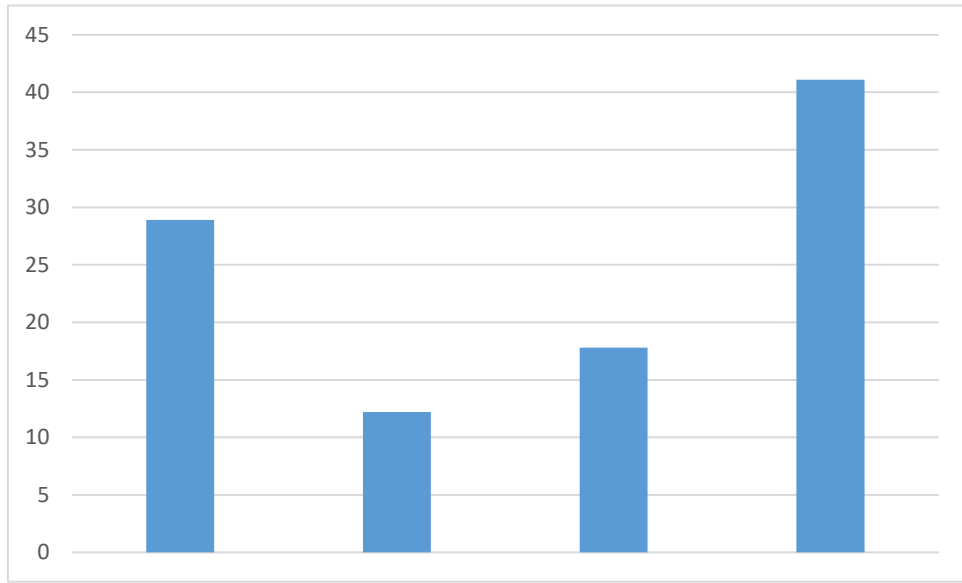
संप्रेषण का माध्यम	आवृत्ति	प्रतिशत
मौखिक सामुदायिक प्रस्तुति	26	28.9
अनुष्ठानिक/पारिवारिक परंपरा	11	12.2
मुद्रित साहित्यिक स्रोत	16	17.8
प्रौद्योगिकी माध्यम (मंच)	37	41.1
कुल	90	100

निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि प्रौद्योगिकी माध्यम मंच सर्वाधिक अनुपात (41.1 प्रतिशत) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो वैश्वीकरण से प्रेरित प्रौद्योगिकी प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को सूचित करता है। मौखिक सामुदायिक प्रस्तुतियाँ अभी भी 28.9 प्रतिशत के साथ उल्लेखनीय भागीदारी बनाए हुए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक प्रथाएँ अब भी विद्यमान हैं, किन्तु उनकी प्रधानता में कमी आई है।



मुद्रित साहित्यिक स्रोत 17.8 प्रतिशत का योगदान देते हैं, जो प्रलेखन तथा शैक्षिक संरक्षण की भूमिका को दर्शाता है।

अनुष्ठानिक एवं पारिवारिक परंपराओं द्वारा संप्रेषण का प्रतिशत सर्वन्यून (12.2 प्रतिशत) है, जो पारिवारिक सांस्कृतिक परिवेश में पीढ़ीगत हस्तांतरण के क्रमशः क्षीण होने का संकेत देता है।



चित्र 2: अवलोकित संप्रेषण के माध्यमों के प्रतिशत का चित्रात्मक निरूपण

चित्र 2 संप्रेषण के पारंपरिक से आधुनिक माध्यमों की ओर हुए संक्रमण को दृश्य रूप में प्रदर्शित करता है।

प्रौद्योगिकी माध्यमों की प्रधानता यह दर्शाती है कि वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी उन्नति ने सांस्कृतिक संप्रेषण की प्रकृति को पुनः रूपायित किया है, जिससे व्यापक पहुँच संभव हुई है, किन्तु साथ ही मौखिक परंपराओं पर निर्भरता में कमी भी आई है।

सारणी 3 चयनित लोक साहित्य नमूने के सामग्री-विश्लेषण के आधार पर पहचाने गए प्रमुख विषयों का वर्गीकरण प्रस्तुत करती है। इन विषयों में कृषि तथा ऋतु-आधारित जीवन, पौराणिकता एवं अनुष्ठानिक प्रथाएँ, प्रवासन और नगरीय अनुभव, सामाजिक

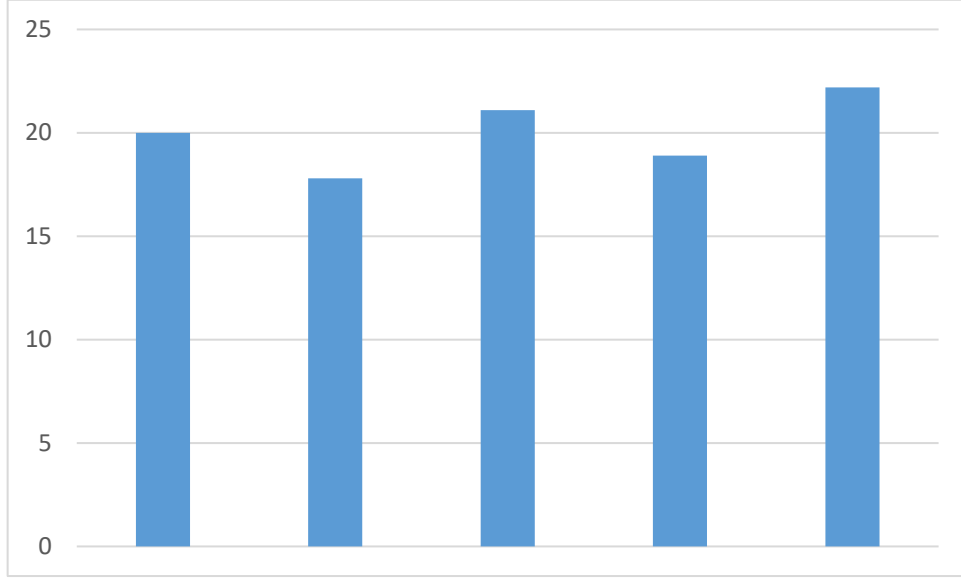


परिवर्तन और आधुनिकीकरण, तथा स्त्री-अनुभव एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति सम्मिलित हैं।

सारणी 3: लोक साहित्य में विषयगत निरूपण

प्रमुख विषय	आवृत्ति	प्रतिशत
कृषि एवं ऋतु-आधारित जीवन	18	20.0
पौराणिकता एवं अनुष्ठानिक प्रथाएँ	16	17.8
प्रवासन एवं नगरीय अनुभव	19	21.1
सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण	17	18.9
स्त्री-अनुभव एवं भावनाएँ	20	22.2
कुल	90	100

प्राप्त आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री-अनुभव एवं भावनाएँ सर्वाधिक प्रतिनिधित्व वाला विषय (22.2 प्रतिशत) है, जो लोक परंपराओं में स्त्री-स्वरो की सशक्त उपस्थिति को रेखांकित करता है। प्रवास एवं नगरीय अनुभव (21.1 प्रतिशत) भी प्रमुख रूप से उभरते हैं, जो वैश्वीकरण से संबंधित सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करते हैं। कृषि एवं ऋतु-आधारित विषय (20 प्रतिशत) ग्रामीण सांस्कृतिक जड़ों के साथ निरंतरता को प्रदर्शित करते हैं। सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण (18.9 प्रतिशत) समकालीन यथार्थ के प्रति बढ़ती सजगता को दर्शाते हैं, जबकि पौराणिकता एवं अनुष्ठानिक प्रथाएँ (17.8 प्रतिशत) अभी भी महत्वपूर्ण बनी हुई हैं, किंतु तुलनात्मक रूप से उनकी प्रमुखता कुछ कम दिखाई देती है।



चित्र 3: लोक साहित्य में विषयगत निरूपण के प्रतिशत का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण

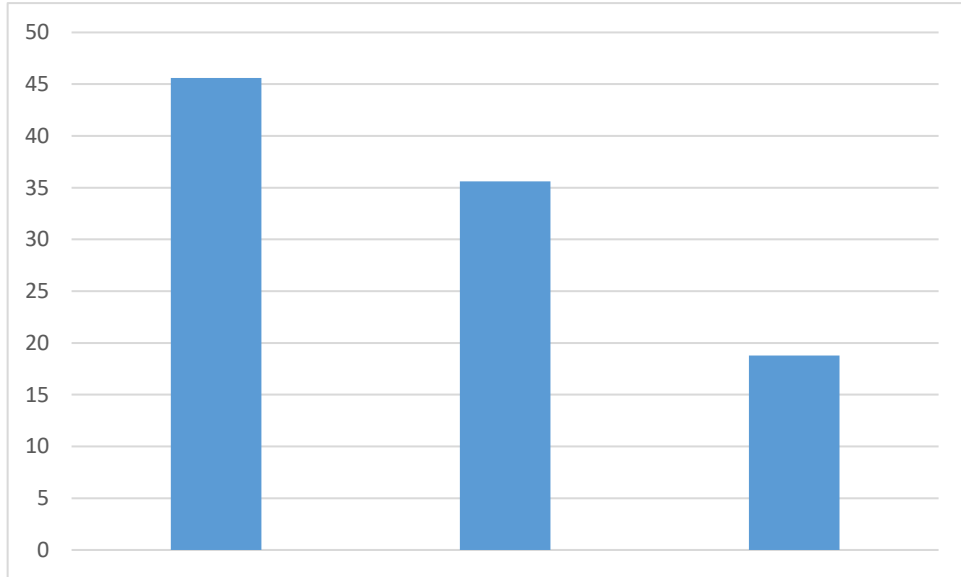
चित्र 3 हिंदी लोक साहित्य में विषयगत विविधता को दृश्य रूप में प्रदर्शित करता है। विभिन्न विषयों के बीच अपेक्षाकृत संतुलित वितरण यह संकेत करता है कि लोक साहित्य पारंपरिक सांस्कृतिक आख्यानों के साथ-साथ आधुनिक सामाजिक सरोकारों को भी समाहित करते हुए विकसित हो रहा है, जिससे वैश्वीकरण के परिवेश में उसकी प्रासंगिकता बनी हुई है।

तालिका 4 विश्लेषित लोक साहित्य नमूने में अवलोकित भाषिक प्रतिरूपों को प्रस्तुत करती है। भाषा-प्रयोग को क्षेत्रीय बोलियों, मानक हिंदी तथा समकालीन रूपांतरणों में उभरते मिश्रित अथवा संकर भाषिक रूपों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

तालिका 4: भाषा-प्रयोग प्रतिरूप

भाषा का प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
क्षेत्रीय बोलियाँ (अवधी, भोजपुरी, बुंदेली आदि)	41	45.6
मानक हिंदी	32	35.6
संकर/मिश्रित भाषा	17	18.8
कुल	90	100

क्षेत्रीय बोलियों का सर्वाधिक अनुपात (45.6 प्रतिशत) यह संकेत करता है कि हिंदी लोक साहित्य अब भी स्थानीय भाषिक परंपराओं में गहराई से निहित है। मानक हिंदी 35.6 प्रतिशत के साथ व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँचने तथा संस्थागत मान्यता की दिशा में अनुकूलन को दर्शाती है। संकर अथवा मिश्रित भाषा-रूप (18.8 प्रतिशत) वैश्वीकरण, माध्यमों के परस्पर प्रभाव तथा सांस्कृतिक सम्मिश्रण के प्रभाव को स्पष्ट करते हैं।



चित्र 4: भाषा-प्रयोग प्रतिरूप के प्रतिशत का चित्रात्मक निरूपण

चित्र 4 पारंपरिक तथा आधुनिक भाषिक रूपों के सहअस्तित्व को दृश्य रूप में प्रदर्शित करता है। यद्यपि क्षेत्रीय बोलियाँ अभी भी प्रमुख हैं, तथापि मानक तथा संकर भाषा-रूपों की स्पष्ट उपस्थिति यह दर्शाती है कि भाषा का विकास लुप्त होने के स्थान पर रूपांतरित हो रहा है। यह भी स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण सांस्कृतिक संवाद, अनुकूलन तथा व्यापक पहुँच को प्रोत्साहित करता है।

1- हिंदी लोक साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव



- **मौखिक संप्रेषण में हास:** नगरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण वे पारंपरिक सामुदायिक सभाएँ कम होती जा रही हैं, जहाँ लोक आख्यानों का प्रदर्शन किया जाता था। नई पीढ़ियाँ प्रौद्योगिकी आधारित मनोरंजन की ओर अधिक आकर्षित हो रही हैं, जिससे मौखिक परंपरा की निरंतरता कमजोर पड़ रही है।
- **सांस्कृतिक एकरूपता:** वैश्विक माध्यमों द्वारा मानकीकृत लोकप्रिय संस्कृति का प्रसार होता है, जिसके कारण अनेक क्षेत्रीय परंपराएँ प्रभावित हो जाती हैं। परिणामस्वरूप कुछ लोक रूप आधुनिक दर्शकों के बीच अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने में संघर्ष कर रहे हैं।
- **भाषिक रूपांतरण:** अवधी, भोजपुरी और बुंदेली जैसी क्षेत्रीय बोलियाँ मानकीकृत हिंदी तथा वैश्विक भाषाओं के दबाव का सामना कर रही हैं। तथापि क्षेत्रीय अस्मिता के प्रति पुनरुत्थानशील रुचि ने संगीत और प्रौद्योगिकी मंचों के माध्यम से बोलियों के पुनर्जीवन को भी प्रोत्साहित किया है।
- **वाणिज्यीकरण:** लोक तत्वों को प्रायः चलचित्रों और व्यावसायिक संगीत में सम्मिलित किया जाता है। यद्यपि इससे कलाकारों को दृश्यता और आय के अवसर प्राप्त होते हैं, किन्तु कभी-कभी इससे पारंपरिक अर्थ और संदर्भ परिवर्तित भी हो जाते हैं।

2- वैश्वीकरण के युग में हिंदी लोक साहित्य का अंतरराष्ट्रीय प्रसार

समकालीन वैश्विक युग में सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ अब भौगोलिक अथवा भाषिक सीमाओं में सीमित नहीं रहीं। प्रौद्योगिकी उन्नति, प्रवासन तथा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान से समर्थित वैश्वीकरण के तीव्र विस्तार ने स्थानीय परंपराओं को विभिन्न देशों और संस्कृतियों तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया है। हिंदी लोक साहित्य, जो पूर्व में मुख्यतः ग्रामीण समुदायों में निहित तथा स्थानीय सामाजिक परिवेश में मौखिक रूप से संप्रेषित होता था, अब क्रमशः वैश्विक सांस्कृतिक क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका है।

यह संक्रमण लोक परंपराओं की स्थिति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को निरूपित करता है, जिसके द्वारा वे क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रथाओं से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित हो रही हैं।



हिंदी लोक साहित्य का अंतरराष्ट्रीय प्रसार सांस्कृतिक वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिसमें पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियाँ आधुनिक संचार तंत्रों और बहुराष्ट्रीय समुदायों के साथ अंतःक्रिया करती हैं। प्रवासी समुदायों, प्रौद्योगिकी मंचों, शैक्षिक सहयोगों तथा सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से लोकगीत, आख्यान और प्रदर्शन-परंपराएँ वैश्विक दर्शकों के बीच दृश्यता प्राप्त कर रही हैं।

यह प्रक्रिया न केवल संरक्षण सुनिश्चित करती है, अपितु समकालीन समाज में लोक साहित्य के अर्थ और कार्य को भी पुनर्परिभाषित करती है, जिससे वह अंतर्सांस्कृतिक संवाद और वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सहभागी बनता है।

इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण ने लोक कलाकारों, शोधकर्ताओं तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के लिए विविध अंतरराष्ट्रीय संदर्भों में पारंपरिक अभिव्यक्तियों की पुनर्व्याख्या और प्रस्तुति के नए अवसर सृजित किए हैं। यद्यपि इस विस्तार से मान्यता और पहुँच में वृद्धि होती है, तथापि इससे प्रामाणिकता, वाणिज्यीकरण तथा सांस्कृतिक स्वामित्व से संबंधित प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं।

अतः हिंदी लोक साहित्य के अंतरराष्ट्रीय प्रसार का अध्ययन यह समझने के लिए आवश्यक है कि पारंपरिक सांस्कृतिक रूप परस्पर संबद्ध वैश्विक परिवेश में किस प्रकार अनुकूलित, संरक्षित और विकसित होते हैं।

8-1 वैश्वीकरण और सांस्कृतिक विस्तार

वैश्वीकरण ने हिंदी लोक साहित्य के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे यह स्थानीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति से विकसित होकर वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त सांस्कृतिक धरोहर बनता जा रहा है। जो लोकगीत, आख्यान और प्रदर्शन-परंपराएँ पूर्व में ग्रामीण समुदायों और क्षेत्रीय सांस्कृतिक परिवेश तक सीमित थीं, वे अब प्रवासन, प्रौद्योगिकी माध्यम-विस्तार, शैक्षिक आदान-प्रदान, सांस्कृतिक उत्सवों तथा बहुराष्ट्रीय सांस्कृतिक तंत्रों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुँच रही हैं। वैश्वीकरण के कारण भौगोलिक अवरोधों के हटने से लोक परंपराएँ क्षेत्रीय सीमाओं से आगे बढ़कर वैश्विक सांस्कृतिक प्रवाह में सम्मिलित हो सकी हैं।



इसके साथ ही वैश्वीकरण ने अंतरसांस्कृतिक अंतःक्रिया को भी प्रोत्साहित किया है, जिससे भिन्न भाषिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के दर्शक भारतीय लोक परंपराओं से जुड़ पा रहे हैं। जो लोक प्रस्तुतियाँ पूर्व में केवल ऋतु-संबंधित अनुष्ठानों अथवा ग्रामीण सभाओं तक सीमित थीं, वे अब अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक उत्सवों और विश्व संगीत समारोहों में प्रस्तुत की जा रही हैं। इस विस्तार ने लोक साहित्य की धारणा को केवल ग्रामीण सांस्कृतिक प्रथा से परिवर्तित कर उसे वैश्विक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित किया है।

सांस्कृतिक विस्तार के प्रमुख आयाम:

- अंतरराष्ट्रीय उत्सवों और सांस्कृतिक प्रदर्शनों में लोक कलाकारों की बढ़ती भागीदारी
- वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर विमर्श में लोक साहित्य का समावेश
- अनुवाद और रूपांतरण के माध्यम से लोक आख्यानों का अंतरसांस्कृतिक सराहना
- विश्व संगीत और प्रदर्शन परंपराओं में हिंदी लोक रूपों का समावेशन
- सांस्कृतिक विविधता और स्थिरता के संवर्धन हेतु लोक साहित्य की मान्यता

8-2 सांस्कृतिक संप्रेषण में भारतीय प्रवासी समुदाय की भूमिका

इस अंतरराष्ट्रीय प्रसार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक भारतीय प्रवासी समुदाय है, जिसकी संख्या विश्वभर में करोड़ों में आंकी जाती है। मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा तथा दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में प्रवासी भारतीय समुदायों ने पीढ़ियों से भोजपुरी, अवधी, ब्रज तथा अन्य हिंदी लोक परंपराओं को संरक्षित रखा है।

उदाहरणार्थ, मॉरीशस और फिजी में भोजपुरी लोकगीत विवाह संस्कारों और धार्मिक उत्सवों का अभिन्न अंग बने हुए हैं, जबकि कैरेबियाई भारतीय समुदाय फगवा (होली) जैसे सांस्कृतिक उत्सवों के दौरान पारंपरिक लोक संगीत का प्रदर्शन करते हैं। ये प्रस्तुतियाँ सांस्कृतिक आधार-स्तंभ के रूप में कार्य करते हुए पूर्वजों की धरोहर से भावनात्मक निरंतरता और सामुदायिक पहचान को सुदृढ़ करती हैं।



अनुष्ठानिक प्रस्तुतियों के अतिरिक्त प्रवासी समुदायों ने सांस्कृतिक संस्थाएँ, भाषा-विद्यालय तथा लोक संगीत समूह स्थापित किए हैं, जो पारंपरिक धरोहर के संरक्षण के लिए समर्पित हैं।

प्रवासी समुदाय के प्रमुख योगदान:

- विदेशों में लोक संगीत और नृत्य उत्सवों का आयोजन
- हिंदी भाषा और परंपराओं के संवर्धन हेतु सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना
- पारिवारिक अनुष्ठानों और सामुदायिक समारोहों के माध्यम से पीढ़ीगत संप्रेषण
- नई पीढ़ी में क्षेत्रीय बोलियों आधारित गीतों का पुनर्जीवन
- बहुसांस्कृतिक समाजों में पहचान के प्रतीक के रूप में परंपराओं का संरक्षण

8-3 प्रौद्योगिकी माध्यम और वैश्विक पहुँच

प्रौद्योगिकी तकनीक और आभासी माध्यमों के विकास ने वैश्विक दृश्यता को और अधिक तीव्र किया है। विभिन्न प्रौद्योगिकी मंचों ने लोक प्रस्तुतियों को महाद्वीपों के पार लाखों दर्शकों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्लेषणात्मक आँकड़े यह दर्शाते हैं कि क्षेत्रीय लोकगीतों को प्रवासी दर्शकों से व्यापक अंतरराष्ट्रीय दर्शक-समूह प्राप्त हो रहा है, जिससे सांस्कृतिक संपर्क का पुनरुत्थान स्पष्ट होता है।

आभासी अभिलेखागारों और डिजिटल कथन-परियोजनाओं ने लुप्तप्राय मौखिक परंपराओं को स्थायी श्रव्य-दृश्य अभिलेखों में परिवर्तित कर विश्वभर में सुलभ बना दिया है।

इसके अतिरिक्त, प्रौद्योगिकी मंचों ने सांस्कृतिक सृजन को लोकतांत्रिक बनाया है, जिससे स्थानीय कलाकार संस्थागत मध्यस्थता के बिना अपनी प्रस्तुतियाँ साझा कर पा रहे हैं।

वैश्विक पहुँच को सुदृढ़ करने वाले प्रौद्योगिकी कारक:

- आभासी प्रसारण द्वारा क्षेत्रीय लोक प्रस्तुतियों की वैश्विक उपलब्धता
- मौखिक परंपराओं के संरक्षण हेतु डिजिटल अभिलेखागार
- स्वतंत्र लोक कलाकारों का उद्भव और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों से संवाद
- वैश्विक संगीतकारों और लोक कलाकारों के बीच सहयोग
- सोशल मीडिया समुदायों के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान



8-4 शैक्षिक एवं संस्थागत मान्यता

शैक्षिक संस्थानों और सांस्कृतिक संगठनों ने वैश्विक विद्वत्ता के क्षेत्र में हिंदी लोक साहित्य को मान्यता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यूरोप और उत्तर अमेरिका के अनेक विश्वविद्यालय दक्षिण एशियाई लोकसाहित्य अध्ययन को सांस्कृतिक और मानवशास्त्रीय पाठ्यक्रमों में सम्मिलित कर रहे हैं।

अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण हेतु अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की मान्यता ने प्रलेखन परियोजनाओं, कार्यशालाओं तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोगों को प्रोत्साहित किया है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद जैसे संस्थानों तथा अंतरराष्ट्रीय लोक उत्सवों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों ने लोक कलाकारों को वैश्विक मंचों पर प्रस्तुति का अवसर प्रदान किया है।

वैश्विक मान्यता में संस्थागत योगदान:

- अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक पाठ्यक्रमों में हिंदी लोक साहित्य का समावेश
- अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण हेतु प्रलेखन और संरक्षण पहल
- अनुसंधान सहयोग और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन
- संग्रहालयों और शोध संस्थानों द्वारा डिजिटल भंडार निर्माण
- लोक कलाकारों को ज्ञान-परंपरा के संवाहक के रूप में मान्यता

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन यह स्थापित करता है कि हिंदी लोक साहित्य वैश्वीकरण की परिवर्तित परिस्थितियों के मध्य सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण में निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, साथ ही वह गतिशील रूप से स्वयं को रूपांतरित भी कर रहा है।

ऐतिहासिक रूप से मौखिक संप्रेषण और सामुदायिक परंपराओं पर आधारित लोक साहित्य सामाजिक शिक्षा, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक संचार का प्रमुख माध्यम रहा है; किंतु वैश्वीकरण ने उसके संप्रेषण के साधनों, विषयगत सरोकारों तथा भाषिक प्रतिरूपों को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है।

अतः स्पष्ट है कि वैश्वीकरण ने परंपरागत संस्कृति को समाप्त करने के बजाय उसके पुनर्व्याख्यान, संरक्षण और अंतरसांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित किया है, जिससे हिंदी



लोक साहित्य स्थानीय परंपराओं और वैश्विक सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के बीच एक सशक्त सेतु के रूप में उभरकर सामने आया है।

संदर्भ सूची

1. अहमद, एल. (2024). भारतीय भाषाओं में लोक साहित्य का एक अवलोकन. *इतिहास एवं सांस्कृतिक अध्ययन अंतरराष्ट्रीय पत्रिका*, 10(2), 1-23.
2. काजी, एम. (2022). उत्तर-पूर्व भारत की लोक संस्कृति और वैश्वीकरण: एक विश्लेषणात्मक समीक्षा. *स्वास्थ्य विज्ञान अंतरराष्ट्रीय पत्रिका*, 6(1), 6744-6751.
3. नाग, डी. (2021). वैश्वीकरण का संचार और संस्कृति पर प्रभाव: भारतीय परिदृश्य. *ग्लोबलिज़्म: संस्कृति, राजनीति और नवाचार पत्रिका*, (3).
4. मुखर्जी, मोलॉय. (2023). आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में लोक संस्कृति की समालोचनात्मक समीक्षा. *आईआईआरओ अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिका*.
5. गुप्ता, अदा. (2025). आधुनिक माध्यमों में भारतीय लोककथाओं का उपयोग कर सांस्कृतिक उद्योगों का निर्माण. मौखिक परंपराओं के वैश्विक माध्यम उद्योगों में रूपांतरण और लोक परंपराओं के वाणिज्यीकरण का अध्ययन.
6. अहमद, ए., एवं अन्य. (2023). वैश्वीकरण पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव का विश्लेषण. साहित्य, कला और परंपराओं को प्रभावित करने वाली सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रक्रियाओं का विवेचन.
7. चट्टोपाध्याय, सुभदीप. (2023). बंगाल की लोक संस्कृति की बदलती प्रवृत्तियाँ और वैश्वीकरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. भारत में लोक परंपराओं, प्रदर्शन रूपों और सांस्कृतिक अस्मिता पर वैश्वीकरण के प्रभाव का परीक्षण.
8. कौर, ए. (2025). सांस्कृतिक संगम: भारत-यूरोपीय संघ संवाद में जन एवं सांस्कृतिक कूटनीति. *स्प्रिंगर पत्रिका लेख*. वैश्वीकरण और माध्यम तंत्रों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के वैश्विक प्रसार का विवेचन.
9. खान, एल. (2024). औपनिवेशिक विरासत से समकालीन यथार्थ तक: भारत में अंग्रेजी और हिंदी वर्चस्व के प्रति दृष्टिकोण. *मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संचार*. हिंदी और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर वैश्वीकरण के भाषिक प्रभाव के विश्लेषण हेतु उपयोगी.
10. विश्वास, विभूति भूषण. (2019). जीवन, लोककथा और अस्मिता: लोकसाहित्य का एक अंतर्विषयी दृष्टिकोण. झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय संगोष्ठी कार्यवृत्त.



आधुनिक और वैश्विक समाज में अस्मिता संरक्षण के रूप में लोकसाहित्य पर केंद्रित.

11. वर्मा, ए. डी. (2025). नव-लोकप्रिय माध्यमों द्वारा रूपांतरित स्वदेशी पहचान और लोक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति. लोकप्रिय तथा वैश्विक माध्यम संस्कृति के माध्यम से लोक परंपराओं के अनुकूलन का अध्ययन.
12. काजी, एम. मुंत्ज़िर रहमान. (2022). उत्तर-पूर्व भारत की लोक संस्कृति और वैश्वीकरण: एक विश्लेषणात्मक समीक्षा. *स्वास्थ्य विज्ञान अंतरराष्ट्रीय पत्रिका*. लोक परंपराओं के रूपांतरण, संस्कृति के वस्तुकरण तथा संरक्षण के अवसरों और पहचान संबंधी चुनौतियों का विवेचन.
13. चौहान, एम. (2024). कजरी लोकगीत: भावनात्मक संतुलन और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का तंत्र. *रूपकथा: मानविकी के अंतर्विषयी अध्ययन की पत्रिका*. उत्तर भारतीय लोकगीतों का अध्ययन, जो आधुनिक वैश्विक सामाजिक संदर्भों में मौखिक साहित्य की निरंतरता को दर्शाता है.
14. कुमारी, एस. (2025). हरियाणा के अहीरवाल क्षेत्र के लोकगीतों में समाज का चित्रण. *शोधवर्ता पत्रिका*. क्षेत्रीय हिंदी लोकगीतों तथा बदलती सामाजिक वास्तविकताओं का विश्लेषण, जो विषय-वस्तु, लैंगिक भूमिकाओं और सांस्कृतिक मूल्यों पर वैश्वीकरण के प्रभाव को समझने में सहायक.
15. सिंह, कपिल कुमार. (2019). वैश्वीकरण और भारतीय लोक संस्कृति: चुनौतियाँ और संभावनाएँ. *सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी अनुसंधान अंतरराष्ट्रीय पत्रिका*.